शत्रु नाश के लिये नीम के "गणपति"

नीम के गुणों को देखते हुए ही हमारे बुजुर्ग कहा करते थे कि जिस घर में नीम का वृक्ष होता है, उस घर के सदस्यों को बीमारी कभी छूती भी नहीं है। पुराने जमाने में तो लोग दांत साफ करने के लिये भी नीम की दांतुन का उपयोग करते थे और मंजन आदि बनाने में भी नीम का ही उपयोग होता था। विभिन्न रोगों में नीम के उबले हुए पानी से स्नान आदि भी कराया जाता था। नीम की उत्पत्ति सर्वप्रथम भारत में ही हुई, तत्पश्चात् आज यह वृहद् स्थल पर पूरे विश्व में फल-फूल रहा है।

नीम दूषित वातावरण को शुद्ध बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। नीम को भगवान नारायण की उपमा ऐसे ही नहीं दी गई है, बल्कि उसके बहुगुणी होने के कारण दी गई है। जिस प्रकार दुःख से पीड़ित व्यक्ति भगवान नारायण का स्मरण करता है, उनकी शरण चाहता है और कृपा चाहता है। उसी प्रकार आयुर्वेद ग्रंथों में नीम को नारायण स्वरूप बतलाकर, उसका उपयोग और सेवन करने की सलाह दी गई है। जो व्यक्ति नित्य नीम का सेवन करता है, वह जीवन में कभी अस्वस्थ नहीं होता तथा दीर्घायु प्राप्त करता है।

नीम घर में होना शुभता का प्रतीक माना गया है। जहां नीम होने से रोग-शोक घर से कोसों दूर रहते हैं वहीं नीम के वृक्ष होने से देवताओं का वास भी घर में रहता है। जिस घर में नीम होता है वह घर धन-धान्य से परिपूर्ण और वहाँ लक्ष्मी का निवास होता है, अतः इस भौतिकतावादी युग में नीम के अभाव में, नीम की लकड़ी से बनी भगवान गणपति की प्रतिमा अतिउपयोगी व लाभदायक सिद्ध हो रही है। भगवान गणपति तो प्रथम पूज्य देव हैं। किसी भी शुभ कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व भगवान गणपति की पूजा उपासना की जाती है ताकि कार्य बिना किसी विघ्न के पूर्ण हो जाये।

भगवान् श्रीगणेश हम सनातनधर्मी हिंदुओ के लिये परम सम्मानीय देवता हैं। वे साक्षात् परब्रह्म परमात्मा हैं। भगवान् श्रीगणेश को प्रसन्न किये बिना कल्याण सम्भव नहीं। भले ही आपके इष्टदेव भगवान् श्रीविष्णु अथवा भगवान् श्रीशंकर अथवा पराम्बा श्री दुर्गा हैं, इन सभी देवी-देवताओं की उपासना की निर्विघ्न सम्पन्नता के लिये विघ्न विनाशक श्रीगणेश का स्मरण आवश्यक है। भगवान् श्री गणेश की यह बड़ी अद्भुत विशेषता है कि उनका स्मरण करते ही सब विघ्न-बाधाएँ दूर हो जाती हैं और सब कार्य निर्विघ्न पूर्ण हो जाते हैं। इसीलिये भगवान गणेश जी को विघ्न हरने वाला भी कहा जाता है। भगवान गणपति शीघ्र प्रसन्न होने वाले और इच्छानुकूल वर देने वाले देवता हैं। इनको प्रसन्न करने के लिये किसी विशेष कठिन तपस्या से नहीं गुजरना पड़ता।

ऐसे में यदि भगवान गणपति की प्रतिमा नीम की लकड़ी से निर्मित हो तो यह सोने पे सुहागा जैसी बात है। नीम जहां आपके घर के वातावरण को शुद्ध एवं सात्विक बनाये रखता है, वहीं भगवान गणपति की प्रतिमा आपकी मनोकामनाओं को पूर्ण करने के लिये उपलब्ध रहती है। जो शुभ लाभ हम नीम से प्राप्त कर सकते हैं वे सब हम इस नीम से निर्मित गणपति प्रतिमा से भी प्राप्त कर सकते हैं। नीम की लकड़ी से बनी गणपति प्रतिमा को घर में स्थापित करने से घर में धन-धान्य की वृद्धि होती है, गृह क्लेश कट कर घर में शुद्ध और शान्ति का वातावरण निर्मित होता है। शत्रुओं का नाश होता है और विपत्तियों का नाश होता है।

नित्य इस प्रतिमा पर धूप-दीप व पूजा करने से भगवान गणपति प्रसन्न होकर अपने भक्तों की समस्त कामनाओं को पूर्ण करते हैं। इस प्रतिमा के स्थापित होने पर आपके घर पर कोई संकट, कोई विघ्न, कोई परेशानी आ ही नहीं सकती। स्वयं भगवान गणपति आपकी रक्षा करते हैं। वे तो हैं ही विघ्न निवारण, फिर भला आपके विघ्नों का निवारण क्यों नहीं करेंगे।

नीम से बनी गणपति प्रतिमा के कुछ विशेष प्रयोग

मूर्तिं कुर्य्याद्गणेशस्य शुभाहे निम्बदारूणा।
प्राणप्रतिष्ठां कृत्वाथ तदग्रे मन्त्रमाजपेत्।।

- किसी शुभ दिन, शुभ मुहूर्त्त या गणेश चतुर्थी के विशेष अवसर पर नीम की लकड़ी से बनी प्राण-प्रतिष्ठित गणेश प्रतिमा स्थापित करने से शत्रु वश में हो जाते हैं और घोर विपत्तियों में भगवान गणेश हमारी रक्षा करते हैं।
- अगर इस प्रतिमा की पूजा करके साधक घर से निकले तो संत्री से लेकर अधिकारी तक उससे प्रभावित हो जाते हैं और साधक के मन में उठने वाली कामना पूर्ण होती है।

स्वेष्टं कार्य्य समाचष्टे स्वप्ने तस्य गणाधिपः।
सहस्रं निक्बकाष्ठानां होमादुच्चाटयेदरीन्।।

- नीम की लकड़ी की मूर्ति बनाकर चतुर्थी की रात्रि में लाल पुष्प एवं चंदन से पूजन करें तथा 1 हजार जप करके रात्रि में उस प्रतिमा को नदी के किनारे पर डाल दें तो भगवान् गणपति साधक के अभीष्ट कार्य को स्वप्न में बतला देते हैं।
- नीम से बनी गणेश प्रतिमा घर में स्थापित कर रोजाना नित्य धूप-दीप करने से जटिल से जटिल शत्रु भी पीछे हट जाता है या मैदान छोड़कर भाग जाता है।

निंबजा नाशयेच्छत्रून्प्रतिमैवं समर्चिता।
मव्यक्तैर्होमतो लाजेर्वशयेदखिलंजगत्।।

- नीम की प्रतिमा का उक्त रीति से पूजन करने से शत्रुओं का नाश होता है।
- नीम की लकड़ी से निर्मित प्रतिमा पर लाल चंदन एवं लाल फूलों से विधिवत पूजन कर उसे मद्यपात्र में रखकर जमीन में 1 हाथ नीचे गाड़ कर उसके ऊपर बैठकर दिन रात मंत्र जप करने से 1 सप्ताह के भीतर सभी घोर उपद्रव नष्ट हो जाते हैं, शत्रु वश में हो जाते हैं और धन-संपत्ति की वृद्धि होती है।

मंत्र- ॐ हस्तिमुखाय लम्बोदराय उच्छिष्टमहात्मने
आं क्रों ह्रीं क्लीं ह्रीं हूं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा

तो आज ही इस प्रतिमा को अपने घर में स्थापित करें और देखें कि किस प्रकार भगवान गणपति की कृपा दृष्टि आप पर स्थिर होती है और आपके सभी कार्य सफल होते हैं। आपकी प्रत्येक अभिलाषा आपको पूर्ण होती दिखाई देगी। आपका घर रिद्धि-सिद्धि का भण्डार बनता दिखाई देगा आपको। आज ही अपने घर में इस शुभ नीम निर्मित गणपति प्रतिमा को स्थापित कीजिये।

न्यौछावर राशि- 2500/- ♦♦♦